श्रीकृष्ण द्वारा भगवान् शिव की तपस्या[1]

एवमुक्त्वा ददौ ज्ञानमुपमन्युर्महामुनिः।
व्रतं पाशुपतं योगं कृष्णायाक्लिष्टकर्मणे।।
स तेन मुनिवर्येण व्याहृतो मधुसूदनः।
तत्रैव तपसा देवं रुद्रमाराधयत् प्रभुः।।
भस्मोद्धूलितसर्वाङ्गो मुण्डो वल्कलसंयुतः।
जजाप रुद्रमनिशं शिवैकाहितमानसः।।
ततो बहुतिथे काले सोमः सोमार्धभूषणः।
अदृश्यत महादेवो व्योम्नि देव्या महेश्वरः।।
किरीटिनं गदिनं चित्रमालं पिनाकिनं शूलिनं देवदेवम्।
शार्दूलचर्माम्बरसंवृताङ्गं देव्या महादेवमसौ ददर्श।।
परश्वधासक्तकरं त्रिनेत्रं नृसिंहचर्मावृतसर्वगात्रम्।

(कू. पु. पू. भा. 24/48-53)

महामुनि उपमन्यु ने सुन्दर कर्म करनेवाले कृष्ण को पशुपतिसम्बन्धी योग, व्रत और ज्ञान का उपदेश दिया। उन श्रेष्ठ मुनि के कहने पर प्रभु श्रीकृष्ण वहीं पर तप द्वारा रुद्रदेव की आराधना करने लगे।

मुण्डित शिर, वल्कलधारी तथा समस्त अङ्ग में विभूति लगाये हुए वे एकमात्र शिव में मन लगाकर निरन्तर रुद्रसम्बन्धी मन्त्र का जप करने लगे। तदनन्तर बहुत दिनों के उपरान्त अर्द्धचन्द्र से अलंकृत सौम्यस्वरूप महेश्वर (महादेव) देवी (पार्वती) के साथ आकाश में दिखलायी पड़े। उन (श्रीकृष्ण) ने किरीट, गदा, पिनाक, त्रिशूल एवं अनेक वर्ण की माला धारण करनेवाले तथा नृसिंह के चर्मरूपी वस्त्र से समस्त अङ्ग आच्छादित किये हुए देवाधिदेव महादेव को देवी (पार्वती) के साथ देखा। (श्रीकृष्ण ने) हाथ में परशु धारण किये, नृसिंह के चर्म से आच्छादित शरीरवाले, प्रणव का उच्चारण कर रहे सहस्र सूर्यों के तुल्य श्रेष्ठ त्रिलोचन का दर्शन किया। उन्होंने अपने सम्मुख पुराणपुरुष, सनातन प्रभु , ईश्वर, योगी, सूक्ष्मातिसूक्ष्म, अनन्तशक्तियुक्त प्राणेश्वर शम्भु को देखा। देवता, पितामह, इन्द्र, अग्नि, वरुण एवं यमराज भी आजतक जिसका प्रभाव नहीं बताते उन्हीं आदिदेव रुद्र को (श्रीकृष्ण ने अपने) सम्मुख देखा। उस समय उन्होंने शंकर के वाम भाग में हाथों में शंख, असि एवं चक्र धारण किये आत्मरूप, अव्यक्त

---

1. श्रीकृष्ण द्वारा भगवान् शिव की तपस्या का उल्लेख महाभारत, शिवपुराण आदि अनेक ग्रन्थों में थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ (शायद कल्पभेद के कारण) मिलता है। यहाँ वर्णित प्रसंग का वर्णन अन्यत्र इसी पुस्तक में किये जाने के बावजूद भी यहाँ इसलिये किया जा रहा है कि यहाँ पर भगवान् शिव की स्तुति बहुत ही विस्तार से की गयी है।

अनन्तरूप अपने(विष्णु) को(बहुत से वचनों द्वारा) ईश की स्तुति करते हुए देखा। उनके दक्षिण भाग में(उन्होंने) हंसारूढ़, देवताओं के स्वामी, अत्यन्त प्रभावयुक्त, लोकगुरु, आकाशस्थ पुरुष पितामह को हाथ जोड़े हुए शंकर की स्तुति करते देखा। उन तीनों लोकों के स्वामी के सम्मुख(उन्होंने) सहस्त्रों सूर्य-तुल्य तथा अमित प्रभावाले नन्दीश्वरों, गणपतियों आदि एवं अग्नितुल्य कार्त्तिक और शाख को देखा। उनके पीछे की ओर(श्रीकृष्ण ने) मरीचि, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, प्रचेता, दक्ष, कण्व, पराशर, वसिष्ठ और स्वायंभुव मनु को देखा। उन उदार बुद्धि विष्णु(श्रीकृष्ण) ने भक्ति-पूर्वक अञ्जलिबद्ध प्रणाम करने के उपरान्त अपने हृदय में आत्मस्वरूप का ध्यान कर देवी(पार्वती) सहित देवताओं में श्रेष्ठ शंकर की मन्त्रों से स्तुति की।

श्रीकृष्ण उवाच

नमोऽस्तु ते शाश्वत सर्वयोने ब्रह्माधिपं त्वामृषयो वदन्ति।
तपश्च सत्त्वं च रजस्तमश्च त्वामेव सर्वं प्रवदन्ति सन्तः।।

(कू. पु. पू. वि. 24/61)

श्रीकृष्ण ने कहा– हे शाश्वत! हे सर्वयोनि!(सबके कारण!) आपको नमस्कार है। ऋषि आपको ब्रह्माधिप(ब्रह्मा का अधिपति) बतलाते हैं, सन्तजन सत्त्व, रज एवं तमस्वरूप तीनों गुण एवं सर्वस्वरूप आपको ही बतलाते हैं।

त्वं ब्रह्मा हरिरथ विश्वयोनिरग्निः संहर्ता दिनकरमण्डलाधिवासः।
प्राणस्त्वं हुतवहवासवादिभेदस्त्वामेकं शरणमुपैमि देवमीशम्।।
सांख्यास्त्वां विगुणमथाहुरेकरूपं योगास्त्वां सततमुपासते हृदिस्थम्।
वेदास्त्वामभिदधतीह रुद्रमग्निं त्वामेकं शरणमुपैमि देवमीशम्।।
त्वत्पादे कुसुममथापि पत्रमेकं दत्त्वासौ भवति विमुक्तविश्वबन्धः।
सर्वाघं प्रणुदति सिद्धयोगिजुष्टं स्मृत्वा ते पदयुगलं भवत्प्रसादात्।।
यस्याशेषविभागहीनममलं हृद्यन्तरावस्थितं
तत्त्वं ज्योतिरनन्तमेकमचलं सत्यं परं सर्वगम्।
स्थानं प्राहुरनादिमध्यनिधनं यस्मादिदं जायते
नित्यं त्वाहमुपैमि सत्यविभवं विश्वेश्वरं तं शिवम्।। (वही 24/62-65)

आप ब्रह्मा, विष्णु, अग्नि, विश्वकर्त्ता, संहारक, सूर्यमण्डल में निवास करनेवाले, प्राण, अग्नि एवं इन्द्रादि देवस्वरूप हैं । मैं एकमात्र समर्थ देव आपकी शरण में आया हूँ। सांख्यशास्त्रज्ञ आपको गुण

रहित कहते हैं एवं योगशास्त्रवाले हृदय में स्थित आपकी सतत उपासना करते रहते हैं। सभी वेद आपको अग्नि एवं रुद्र कहते हैं। मैं एकमात्र समर्थ देव आपकी शरण में आया हूँ। आपके चरणों में एक भी पुष्प अथवा पत्र चढ़ाकर मनुष्य संसार के बन्धन से विमुक्त हो जाता है। सिद्धों और योगियों से सेवित आपके चरणकमल का स्मरण कर मनुष्य आपकी कृपा से सभी पापों को दूर कर देता है। तत्त्वदर्शी लोग आपको सभी प्रकार के विभाग से रहित, अमल, हृदय प्रदेश में स्थित, ज्योति, अनन्त, अचल, सत्य, सर्वोत्कृष्ट, सर्वव्यापी, आदि, मध्य और अन्तरहित स्थानस्वरूप कहते हैं। यह (चराचर विश्व) जिससे उत्पन्न होता है ऐसे आप सत्यविभव नित्यस्वरूप विश्वेश्वर शिव की मैं शरण में आया हूँ।

ॐ नमो नीलकण्ठाय त्रिनेत्राय च रंहसे। महादेवाय ते नित्यमीशानाय नमो नमः।।
नमः पिनाकिने तुभ्यं नमो मुण्डाय दण्डिने। नमस्ते वज्रहस्ताय दिग्वस्त्राय कपर्दिने।।
नमो भैरवनादाय कालरूपाय दंष्ट्रिणे। नागयज्ञोपवीताय नमस्ते वह्निरेतसे।।
नमोऽस्तु ते गिरीशाय स्वाहाकाराय ते नमः। नमो मुक्ताट्टहासाय भीमाय च नमो नमः।।
नमस्ते कामनाशाय नमः कालप्रमाथिने। नमो भैरववेषाय हराय च निषङ्गिणे।।
नमोऽस्तु ते त्र्यम्बकाय नमस्ते कृत्तिवाससे। नमोऽम्बिकाधिपतये पशूनां पतये नमः।।
नमस्ते व्योमरूपाय व्योमाधिपतये नमः। नरनारीशरीराय सांख्ययोगप्रवर्तिने।।

(कू. पु. पू. वि. 24/66-72)

प्रणवरूप नीलकण्ठ, त्रिलोचन एवं रंहस् अर्थात् शक्तिस्वरूप आपको नमस्कार है। आप नित्य ईशान महादेव को बारंबार नमस्कार है। पिनाक, मुण्ड एवं दण्डधारी आपको नमस्कार है। वज्रहस्त, दिगम्बर एवं जटाजूटधारी आपको नमस्कार है। भयङ्कर नाद करनेवाले, कालस्वरूप, दंष्ट्रावाले (दाढ़वाले) को नमस्कार है। नागों का यज्ञोपवीत धारण करनेवाले एवं अग्निस्वरूप वीर्यवाले आपको नमस्कार है। आप गिरीश को नमस्कार है। स्वाहाकारस्वरूप आपको नमस्कार है। मुक्त अट्टहास करनेवाले को नमस्कार है। भीमस्वरूप को बारंबार नमस्कार है। काम का विनाश करनेवाले तथा काल को मथनेवाले को नमस्कार है। भयङ्कर वेषवाले निषङ्गधारी (तरकसधारी) हर को नमस्कार है। आप त्रिलोचन एवं गजचर्मधारी को नमस्कार है। अम्बिका अर्थात् पार्वती के स्वामी पशुपति को नमस्कार है। व्योमस्वरूप एवं व्योमाधिपति को नमस्कार है। नर और नारीयुक्त शरीरवाले तथा साङ्ख्य और योग के प्रवर्तक को नमस्कार है।

नमो दैवतनाथाय देवानुगतलिङ्गिने। कुमारगुरवे तुभ्यं देवदेवाय ते नमः।।
नमो यज्ञाधिपतये नमस्ते ब्रह्मचारिणे। मृगव्याधाय महते ब्रह्माधिपतये नमः।।
नमो हंसाय विश्वाय मोहनाय नमो नमः। योगिने योगगम्याय योगमायाय ते नमः।।
नमस्ते प्राणपालाय घण्टानादप्रियाय च। कपालिने नमस्तुभ्यं ज्योतिषां पतये नमः।।
नमो नमो नमस्तुभ्यं भूय एव नमो नमः। मह्यं सर्वात्मना कामान् प्रयच्छ परमेश्वर।।

(वही 24/73-77)

देवों के स्वामी तथा देवों से आराध्य लिङ्गवाले आपको नमस्कार है। कुमारगुरु (अर्थात् कार्तिकेय के पिता) देवाधिदेव आपको बारंबार नमस्कार है। यज्ञाधिपति को नमस्कार है। ब्रह्मचारी को नमस्कार है। महान् मृगव्याध को नमस्कार है। ब्रह्माधिपति को नमस्कार है। हंस, विश्व और मोहन को बारंबार नमस्कार है। योगगम्य एवं योगमायास्वरूप योगी को नमस्कार है। प्राणों के पालक तथा घण्टानादप्रिय को नमस्कार है। कपाली तथा ज्योतियों(नक्षत्रों) के पति आपको नमस्कार है। आपको नमस्कार है, नमस्कार है। आपको पुनः पुनः मेरा नमस्कार है। हे परमेश्वर! आप मुझे समस्तरूप से अभीष्टों को प्रदान करें।

सूतजी कहते हैं हे विप्रो! इस प्रकार भक्ति-पूर्वक देवेश की स्तुति कर वे माधव देव और देवी अर्थात् महादेव और पार्वती के चरणों में दण्डवत् गिर पड़े। केशिनिषूदन कृष्ण को उठाकर मेघतुल्य गम्भीर ध्वनिवाले भगवान् शंकर ने मधुर वचन कहा। हे पुण्डरीकाक्ष! हे अव्यय! आपने तप क्यों किया? आप ही इस लोक में सभी कामना करनेवालों को अभीष्ट प्रदान करनेवाले हैं। आप नारायण नामक मेरी उत्कृष्ट मूर्ति हैं। हे पुरुषोत्तम! आपसे अप्राप्त कुछ नहीं है। हे केशव! अपने योग द्वारा आप अपने को अनन्त नारायण नामक परमेश्वरस्वरूप महादेव एवं महायोगी जानो। उनका वचन सुनने के उपरान्त विश्वेश एवं हिमालयपुत्री देवी पार्वती की ओर देखकर श्रीकृष्ण ने हँसते हुए वृषध्वज से कहा-हे शंकर! अपने योग द्वारा आप सभी कुछ जानते हैं। मैं अपने सदृश आपका भक्त पुत्र चाहता हूँ। हे शंकर! आप मुझे प्रदान करें। विश्वात्मा हर ने प्रसन्न मन से कहा 'ऐसा ही हो'।

तदुपरान्त गिरिजा देवी को देखकर उन्होंने केशव का आलिङ्गन किया। तदनन्तर शंकर के आधे शरीर में स्थित जगत् की माता पर्वतराज हिमालय की पुत्री देवी(पार्वती) ने हृषीकेश से कहा- हे अच्युत! केशव! मैं ईश्वर(अर्थात् हमारे पति शिव) और मुझ में सर्वदा स्थिर रहनेवाली आपकी अनन्त तथा अनन्य निश्चल भक्ति को जानती हूँ। आप साक्षात् सर्वात्मा नारायण पुरुषोत्तम हैं। पूर्वकाल में देवों के प्रार्थना करने पर देवकी के पुत्ररूप से आप उत्पन्न हुए हैं। अब आप स्वयं द्वारा अपने को तथा अपने स्वच्छ स्वरूप को देखें। हम दोनों में कोई भेद नहीं हैं। तत्त्वदर्शी लोग(हम दोनों को) एक रूप से देखते हैं। हे केशव! मुझसे अभीष्ट इन वरों को ग्रहण करो। तुम्हें सर्वज्ञता, ऐश्वर्य, परमेश्वर सम्बन्धी ज्ञान, ईश्वर अर्थात् शिव में निश्चल भक्ति तथा स्वयं में श्रेष्ठ बल की सिद्धि हो। उन महादेवी ने जब जनार्दन कृष्ण से इस प्रकार से कहा तब कृष्ण ने(पार्वती देवी के) आदेश को शिरोधार्य किया एवं देव(शंकर) ने भी ईश्वर(कृष्ण) को आशीर्वाद दिया। तदनन्तर देवों एवं मुनियों से पूजित होते हुए देवाधिदेव गिरीश भगवान् शंकर कृष्ण का हाथ पकड़कर देवी-सहित कैलास पर्वत पर चले गये।

(यह लेख गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कूर्मपुराण, पू. वि. अ. 24 पर आधारित है।)

❁❁❁❁❁❁